नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

On Line – आगममंजूषा

[२४] चउसरणं

* संकलन एवं प्रस्तुतकर्ता *

मुनि दीपरत्नसागर [M.Com., M.Ed., Ph.D.]

||किंचित् प्रास्ताविकम्||

ये आगम-मंजूषा का संपादन आजसे ७० वर्ष पूर्व अर्थात् वीर संवत २४६८, विक्रम संवत-१९९८, ई.स.1942 के दौरान हुआ था, जिनका संपादन पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरिजी म.सा.ने किया था| आज तक उन्ही के प्रस्थापित-मार्ग की रोशनी में सब अपनी-अपनी दिशाएँ ढूंढते आगे बढ़ रहे हैं|

हम ७० साल के बाद आज ई.स.-2012,विक्रम संवत-२०६८,वीर संवत-२५३८ में वो ही आगम-मंजूषा को कुछ उपयोगी परिवर्तनों के साथ इंटरनेट के माध्यम से सर्वथा सर्वप्रथम “ OnLine-**आगममंजूषा** ” नाम से प्रस्तुत कर रहे हैं|

* मूल आगम-मंजूषा के संपादन की किंचित् भिन्नता का स्वीकार *

[१]आवश्यक सूत्र-(आगम-४०) में केवल मूल सूत्र नहीं है, मूल सूत्रों के साथ निर्युक्ति भी सामिल की गई है|

[२]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) में भी केवल मूल सूत्र नहीं है, मूलसूत्रों के साथ भाष्य भी सामिल किया है|

[३]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) का वैकल्पिक सूत्र जो “पंचकल्प” है, उनके भाष्य को यहाँ सामिल किया गया है|

[४] “ओघनिर्युक्ति”-(आगम-४१) के वैकल्पिक आगम “पिंडनिर्युक्ति” को यहाँ समाविष्ट तो किया है, लेकिन उनका मुद्रण-स्थान बदल गया है|

[५] “कल्प(बारसा)सूत्र” को भी मूल आगममंजूषा में सामिल किया गया है| -मुनि दीपरत्नसागर

: Address:-

Mnui Deepratnasagar,
MangalDeep society, Opp.DholeshwarMandir,
POST:- THANGADH Dist.surendranagar.
Mobile:-9825967397 jainmunideepratnasagar@gmail.com

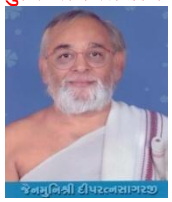

श्रीचतुःशरणप्रकीर्णकम्-

सावज्जजोगविरई उक्कित्तण गुणवओ अ पडिवत्ती। खलिअस्स निंदणा वणतिगिच्छ गुणधारणा चेव ॥१॥ चारित्तस्स विसोही कीरइ सामाइएण किल इहयं। सावज्जेअरजोगाण वज्जणासेवणत्तणओ ॥२॥ दंसणयारविसोही चउवीसायत्थएण किज्जइ य। अच्चब्भुअगुणकित्तणरूवेण जिणव-रिंदाणं ॥३॥ नाणाईआ उ गुणा तस्संपन्नपडिवत्तिकरणाओ। वंदणएणं विहिणा कीरइ सोही उ तेसिं तु ॥४॥ खलिअस्स य तेसिं पुणो विहिणा जं निंदणाइ पडिकमणं। तेण पडिक्कम-णेणं तेसिंपि अ कीरए सोही ॥५॥ चरणाइयाइयाणं जहक्कमं वणतिगिच्छरूवेणं। पडिकमणासुद्धाणं सोही तह काउसग्गेणं ॥६॥ गुणधारणरूवेणं पच्चक्खाणेण तवइआरस्स। विरि-आयारस्स पुणो सव्वेहिवि कीरए सोही ॥७॥ गयवसहसीहअभिसेअदामससिदिणयरं झयं कुंभं। पउमसर सागर विमाण-भवण रयणुच्चय सिहिं च ॥८॥ अमरिंदनरिंदमुणिंदवंदिअं वंदिउं महावीरं। कुसलाणुबंधि बंधुरमज्झयणं कित्तइस्सामि ॥९॥ चउसरणगमण दुक्कडगरिहा सुकडाणुमोअणा चेव। एस गणो अणवरयं कायव्वो कुसलहेउत्ति॥१०॥ अरिहंत सिद्ध साहू केवलिकहिओ सुहावहो धम्मो। एए चउरो चउगइहरणा सरणं लहइ धन्नो ॥११॥ अह सो जिणभत्तिभरुत्थरंतरोमंचकंचुअकरालो। पहरिसपणउम्मीसं सीसंमि कयंजली भणइ ॥२॥ रागद्दोसारीणं हंता कम्मट्ठगाइअरिहंता। विसयकसायारीणं अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥३॥ रायसिरिमुवक्कसित्ता तवचरणं दुच्चरं अणुचरित्ता। केवलसिरिमरिहंता० ॥४॥ थुइवंदण-मरिहंता अमरिंदनरिंदपूअमरिहंता। सासयसुहमरहंता० ॥५॥ परमणगयं मुणंता जोइंदमहिंदझाणमरहंता। धम्मकहं अरहंता० ॥६॥ सव्वजिआणमहिंसं अरहंता सच्चवयणमरहंता। बंभव्वयमरहंता० ॥७॥ ओसरणमवसरित्ता चउतीसं अइसए निसेवित्ता। धम्मकहं च कहंता० ॥८॥ एगाइ गिराऽणेगे संदेहे देहिणं समं छित्ता। तिहुयणमणुसासंता० ॥९॥ वयणामएण भुवणं निव्वाविंता गुणेसु ठावंता। जिअलोअमुद्धरंता० ॥२०॥ अच्चब्भुयगुणवंते नियजससससहरपसाहियदिअंते। निअयमणाइअणंते पडिवन्नो सरणमरिहंते ॥१॥ उज्झिअजरमरणाणं समत्तदुक्खत्तसत्तसरणाणं। तिहुअणजणसुहयाणं अरिहंताणं नमो ताणं ॥२॥ अरिहंतसरणमलसुद्धिलद्धसुविसुद्धसिद्धबहुमाणो। पणयसिररइयकरकमलसेहरो सहरिसं भणइ ॥३॥ क-म्मट्ठक्खयसिद्धा साहाविअनाणदंसणसमिद्धा। सव्वट्ठलद्धिसिद्धा ते सिद्धा हुंतु मे सरणं ॥४॥ तिअलोअमत्थयत्था परमपयत्था अचिंतसामत्था। मंगलसिद्धपयत्था सिद्धा सरणं सुहप-सत्था ॥५॥ मूलुक्खयपडिवक्खा अमूढलक्खा सजोगिपच्चक्खा। साहाविअत्तसुक्खा सिद्धा सरणं परममुक्खा ॥६॥ पडिपिल्लिअपडिणीया समग्गझाणग्गिदड्ढभवबीआ। जोईसरस-रणीया सिद्धा सरणं सुमरणीया ॥७॥ पावियपरमाणंदा गुणनीसंदा विभिन्न(प्र० विदिण्ण)भवकंदा। लहुईकयरविचंदा सिद्धा सरणं खविअदंदा ॥८॥ उवलद्धपरमबंभा दुल्लहलंभा विमु-क्कसंरंभा। भुवणघरधरणखंभा सिद्धा सरणं निरारंभा ॥९॥ सिद्धसरणेण नवबंभहेउसाहुगुणजणिअबहुमाणो (प्र० अणुराओ)। मेइणिमिलंतसुपसत्थमत्थओ तत्थिमं भणइ ॥३०॥ जिअलोअबंधुणो कुगइसिंधुणो पारगा महाभागा। नाणाइएहिं सिवसुक्खसाहगा साहुणो सरणं ॥१॥ केवलिणो परमोही विउलमई सुअहरा जिणमयंमि। आयरिअ उवज्झाया ते सव्वे साहुणो सरणं ॥२॥ चउदसदसनवपुव्वी दुवालसिक्कारसंगिणो जे अ। जिणकप्पाहालंदिअपरिहारविसुद्धिसाहू अ ॥३॥ खीरासवमहुआसवसंभिन्नस्सोअकुट्ठबुद्धी अ। चारणवेउव्वि-पयाणुसारिणो साहुणो सरणं ॥४॥ उज्झियवइरविरोहा निच्चमदोहा पसंतमुहसोहा। अभिमयगुणसंदोहा हयमोहा साहुणो सरणं ॥५॥ खंडिअसिणेहदामा अकामधामा निकामसुह-कामा। सुपुरिसमणाभिरामा आयारामा मुणी सरणं ॥६॥ मिल्हिअविसयकसाया उज्झियघरघरणिसंगसुहसाया। अकलिअहरिसविसाया साहू सरणं गयपमाया ॥७॥ हिंसाइदोस-सुन्ना कयकारुन्ना सयंभुरुपन्ना (प्र० प्पुण्णा)। अजरामरपहखुन्ना साहू सरणं सुकयपुन्ना ॥८॥ कामविडंबणचुक्का कलिमलमुक्का विवि(मु)क्कचोरिक्का। पावरयसुरयरिक्का साहू गुणरय-णचच्चिक्का ॥९॥ साहुत्तसुट्ठिया जं आयरिआई तओ य ते साहू। साहुभणिएण गहिया तम्हा ते साहुणो सरणं ।४०। पडिवन्नसाहुसरणो सरणं काउं पुणोवि जिणधम्मं। पहरिसरोमं-चपवंचकंचुअंचिअतणू भणइ ॥१॥ पवरसुकएहि पत्तं पत्तेहिवि नवरि केहिवि न पत्तं। तं केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवन्नोऽहं ॥२॥ पत्तेण अपत्तेण य पत्ताणि अ जेण (२२७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नरसुरसुहाइं । मुक्खसुहं पुण पत्तेण नवरि धम्मो स मे सरणं ॥ ३ ॥ निद्दलिअकलुसकम्मो कयसुहजम्मो खलीकयअहम्मो । पमुहपरिणामरम्मो सरणं मे होउ जिणधम्मो ॥ ४ ॥ कालत्तएवि न मयं जम्मणजरमरणवाहिसयसमयं । अमयंव बहुमयं जिणमयं च सरणं पवन्नोऽहं ॥ ५ ॥ पसमिअकामपमोहं दिट्ठादिट्ठेसु नकलिअविरोहं । सिवसुहफलयममोहं धम्मं० ॥ ६ ॥ नरयगइगमणरोहं गुणसंदोहं पवाइनिक्खोहं । निहणिअवम्महजोहं धम्मं० ॥ ७ ॥ भासुरसुवन्नसुंदररयणालंकारगारवमहग्घं । निहिमिव दोग्गच्चहरं धम्मं जिणदेसिअं वंदे ॥ ८ ॥ चउसरणगमणसंचिअसुचरिअरोमंचअंचियसरीरो । कयदुक्कडगरिहो असुहकम्मक्खयकंखिरो भणइ ॥ ९ ॥ इहभविअमन्नभविअं मिच्छत्तपवत्तणं जमहिगरणं । जिणपवयणपडिकुट्टं दुट्ठं गरिहामि तं पावं ॥ ५० ॥ मिच्छत्ततमंधेणं अरिहंताइसु अवन्नवयणं जं । अन्नाणेण विरइयं इण्हिं गरि० ॥ १ ॥ सुअधम्मसंघसाहुसु पावं पडिणीअयाइ जं रइअं । अन्नेसु अ पावेसुं इण्हिं० ॥ २ ॥ अन्नेसु य जीवेसुं मित्तीकरुणाइगोयरेसु कयं । परिआवणाइ दुक्खं इण्हिं० ॥ ३ ॥ जं मणवयकाएहिं कयकारिअअणुमईहिं आयरियं । धम्मविरुद्धमसुद्धं सव्वं गरि० ॥ ४ ॥ अह सो दुक्कडगरिहादलिउक्कडदुक्कडो फुडं भणइ । सुकडाणुरायसमुइन्नपुन्नपुलयंकुरकरालो ॥ ५ ॥ अरिहत्तं अरिहंतेसु जं च सिद्धत्तणं च सिद्धेसु । आयारं आयरिए उज्झायत्तं उवज्झाए ॥ ६ ॥ साहूण साहुचरिअं च देसविरइं च सावयजणाणं । अणुमन्ने सव्वेसिं सम्मत्तं सम्मदिट्ठीणं ॥ ७ ॥ अहवा सव्वं चिअ वीअरायवयणाणुसारि जं सुकयं । कालत्तएवि तिविहं (विहियं) अणुमोएमो तयं सव्वं ॥ ८ ॥ सुहपरिणामो निच्चं चउसरणगमाइ आयरं जीवो । कुसलपयडीउ बंधइ बद्धाउ सुहाणुबंधाउ ॥ ९ ॥ मंदणुभावा बद्धा तिव्वणुभावाउ कुणइ ता चेव । असुहाउ निरणुबंधाउ कुणइ तिव्वाउ मंदाओ ॥ ६० ॥ ता एयं कायव्वं बुहेहि निच्चंपि संकिलेसम्मि । होइ तिकालं सम्मं असंकिलेसंमि सुकयफलं ॥ १ ॥ चउरंगो जिणधम्मो न कओ चउरंगसरणमवि न कयं । चउरंगभवुच्छेओ न कओ हा हारिओ जम्मो ॥ २ ॥ इअ-जीवपमायमहारिवीरभद्दंतमेअमज्झयणं । झाएसु तिसंझमवंझकारणं निव्वुइसुहाणं ॥ ६३ ॥ इइ चउसरणं पयन्नं १ ॥